राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस हेतु संदेश

प्रिय सरपंच बहनों और भाइयों,

राज्य के विकास हेतु आप द्वारा किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों के लिए बधाई!

ग्राम पंचायत में विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर कार्य करने के साथ–साथ बच्चों से जुड़े मुद्दों पर कार्य करना हमारी प्रमुख जिम्मेदारी है। ग्राम स्तर पर बच्चों के स्वास्थ्य सुधार हेतु निरंतर प्रयास करने के बाद भी इस दिशा में और अधिक सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है।

बच्चों की आंत (पेट) में कृमि (कीड़े) संक्रमण के बहुत से हानिकारक प्रभाव हैं जैसे खून की कमी (एनीमिया), कुपोषण, भूख न लगना, थकान और बेचैनी, मल में खून आना, पेट में दर्द, मितली, उल्टी और दस्त आना। साक्ष्य सिद्ध करते है कि उपरोक्त सभी समस्याओं के निराकरण के लिए कृमि नियंत्रण एक प्रभावी उपाय है। बच्चों को कृमि नियंत्रण के सीधे फायदे खून की कमी में सुधार और बेहतर पोषण स्तर है जबकि अनुमानित फायदों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद, विद्यालय और आंगनबाड़ी केन्द्रों में उपस्थिति तथा सीखने की क्षमता में सुधार, भविष्य में कार्यक्षमता और औसत आय में बढ़ोतरी शामिल है।

कृमि नियंत्रण कार्यक्रम के विगत तीन चरणों की भांति इस वर्ष भी राज्य सरकार द्वारा 10 फरवरी 2016 को राज्य के सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों और विद्यालयों में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस आयोजित किया जायेगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आप से निम्नलिखित सहयोग अपेक्षित है:

- ग्राम स्तर पर कृमि नियंत्रण के महत्त्व को आमजन (विशेषतः माता–पिता एवं अभिभावक) को बताना और समुदाय में जागरूकता पैदा करना।
- कृमि नियंत्रण कार्यक्रम के बारे में 10 फरवरी 2016 से पहले पंचायत की बैठकों में चर्चा करके कार्यक्रम सम्पादन हेतु कार्य–योजना का निर्माण करना।
- विद्यालय में नामांकित और विद्यालय न जाने वाले बच्चों के साथ संवाद करके उन्हें कार्यक्रम में भाग लेने हेतु प्रेरित करना।
- विद्यालय न जाने वाले बच्चों के माता–पिता एवं अभिभावकों से सम्पर्क करके उन्हें बच्चों को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस के दिन (10 फरवरी 2016) विद्यालय में भेजने के लिए प्रोत्साहित करना।
- वार्ड पंच और पंचायत/ग्राम स्तर पर कार्यरत विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों (ए.एन.एम, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, साथिन, आशा सहयोगिनी, पटवारी, ग्रामसेवक, अध्यापक आदि) की कार्यक्रम में भागीदारी सुनिश्चित करना।
- राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस के आयोजन से पूर्व ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल एवं पोषण समिति की बैठक मे चर्चा उपरांत सभी समिति सदस्यों की कार्यक्रम हेतु भूमिका तय करना।
- प्रधानाध्यापक और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से सम्पर्क करके कार्यक्रम के आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्थाओं का जायजा लेकर विद्यालय और आंगनबाड़ी केन्द्र पर कार्यक्रम सम्पादन के लिए रणनीति निर्माण करना।
- कार्यक्रम के आयोजन के दिन विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण करके प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना।

आपसे आशा है कि कार्यक्रम में प्रभावी योगदान करके राज्य के 2.5 करोड़ बच्चों हेतु बेहतर स्वास्थ्य एवं भविष्य निर्माण मे सहयोग करेंगे!

सधन्यवाद !

राजेन्द्र राठौड़
चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री
राजस्थान सरकार